IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"शाहगंज तहसील(जनपद जौनपुर) के अन्तर्गत सामाजिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन तथा ग्रामीण नियोजन के उपागमन की आवश्यकता"

शोध निर्देशक
डॉ0 पवन सिंह
असि0 प्रोफेसर भूगोल विभाग
सल्तनत बहादुर पी0जी0 कालेज
बदलापुर जौनपुर (उ0 प्र0)

शोधार्थिनी
शिवाली सिंह
भूगोल विभाग
सल्तनत बहादुर पी0जी0 कालेज
बदलापुर जौनपुर (उ0 प्र0)

शोध सारांश

ग्रामीण अधिवास मानव निवास के मूल आधार हैं । मानव समूह जहॉ स्थायी एवं अस्थायी रूप से घर बनाकर रहते है। उन समूहों को मानव अधिवास की संज्ञा दी जाती है। अधिवास का निर्माण उन क्षेत्रों में किया जाता है, जहॉ पर समतल भूमि, जल प्राप्ति की सुविधा, मानव जीवन की सुरक्षा, मानव को आकर्षित करने के लिए कोई तथ्य या संसाधन, आवागमन के लिए सम्पर्क स्थापित करने की सुविधा प्राप्त हो। ग्रामीण अधिवास में सामान्यतः एकाकी अधिवास कृषक घर पुरवा और गॉव सम्मिलित होते है, जिनमें से अधिकांश निवासी मुख्य उद्यम, कृषि करना, पशुपालन, कुटीर उद्यम, मछलियॉ पकड़ना, लकड़ियां काटना, वन वस्तु का संग्रह आदि शाहगंज तहसील के अन्तर्गत सामाजिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन तथा ग्रामीण नियोजन के उपागम की आवश्यकता के सम्बन्ध में अध्ययन किया गया है। मानव निवास स्थान मानव और पर्यावरण के परस्पर सम्बन्धों का एक महत्वपूर्ण पहलू है । मानव अपनी आवश्यकतानुसार निरन्तर वहॉ के भूदृश्यों में परिवर्तन कर रहा है। इसलिए फसलों को उगाने के कृषि भूमि का विकास खेत में सिंचाई के लिए पानी, गलियों–सड़कों, दुकान, स्कूल, चिकित्सालय, सिनेमाघर, कारखानों, पार्क, खेल का मैदान आदि अधिवास के रूप में उपयोग कर रहा है। इस प्रकार ग्रामीण अधिवास एवं व्यावसायिक संरचना के बढ़ते प्रभाव के कारण ग्रामीण अधिवास नियोजन की आवश्यकता बढ़ने लगी। जिससे अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण नियोजन के माध्यम से सामाजिक, व्यावसायिक संरचना में सुधार किया जा सकता है।

प्रस्तावनाः–

अध्ययन क्षेत्र शाहगंज तहसील (जौनपुर जनपद) के अन्तर्गत सामाजिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन एवं ग्रामीण नियोजन की आवश्यकता शीर्षक के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक संरचना का आधार शिक्षा एवं स्वास्थ्य के माध्यम से अध्ययन किया जाता है। शिक्षा किसी देश या क्षेत्र के सामाजिक विकास का वह आधार को जो मानव विकास को स्तम्भ के रूप में आधार प्रदान करता है तथा स्वास्थ्य सामाजिक विकास का वह पहलू है जो मानव स्वास्थ्य के शारीरिक एवं मानसिक सन्तुलन को स्थापित करता है। इस प्रकार सामाजिक संरचना से स्वास्थ्य और शिक्षा एक महत्वपूण्र कारक है। उसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत व्यावसायिक संरचना, सामाजिक विकास का वह पहलू जो पेयजल स्रोत परिवहन एवं संचार, विद्युत उद्योग, कारखाने, व्यापार, कृषि एवं प्राथमिक कार्यों की प्रधानता होती है। ग्रामीण अधिवास का बदलता हुआ स्वरूप आज ग्रामीण क्षेत्रों, ग्रामीण अधिवास नियोजन की आवश्यकता बढ़ती जा रही है।

प्रत्येक क्षेत्र का स्वयं एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र होता है, जिसके प्रमुख घटक भौतिक और सांस्कृतिक होते हैं। भौतिक एवं सांस्कृतिक तत्व शामिल होकर किसी क्षेत्र की भौगोलिक पृष्ठभूमि का सृजन करते हैं। भौगोलिक पृष्ठभूमि का क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। भौगोलिक स्थिति के अनुसार शाहगंज तहसील उ0 प्र0 राज्य के पूर्वी भाग में जौनपुर जनपद की उत्तरी तहसील है। शाहगंज तहसील 250 48′ 30′′ उ0 अक्षांश 250 12′ उत्तरी अक्षांश तथा 820 46′ पूर्वी देशान्तर 820 46′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। अध्ययन क्षेत्र का कुल क्षेत्र 706.63 वर्ग किमी0 है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से 3 विकासखण्ड और 40 न्याय पंचायत तथा 549 ग्राम सभाओं में विभाजित है। अध्ययन क्षेत्र की उत्तरी पश्चिमी सीमा पर सुल्तानपुर जनपद पूर्वी सीमा पर आजमगढ़ जनपद, दक्षिणी सीमा पर जौनपुर जनपद स्थित है। जौनपुर जनपद के सदर और बदलापुर तहसील स्थित है। शाहगंज तहसील की कुल जनसंख्या 7619914 है।

उ0 प्र0 सहित जौनपुर जनपद में शाहगंज तहसील का प्रशासनिक मानचित्र

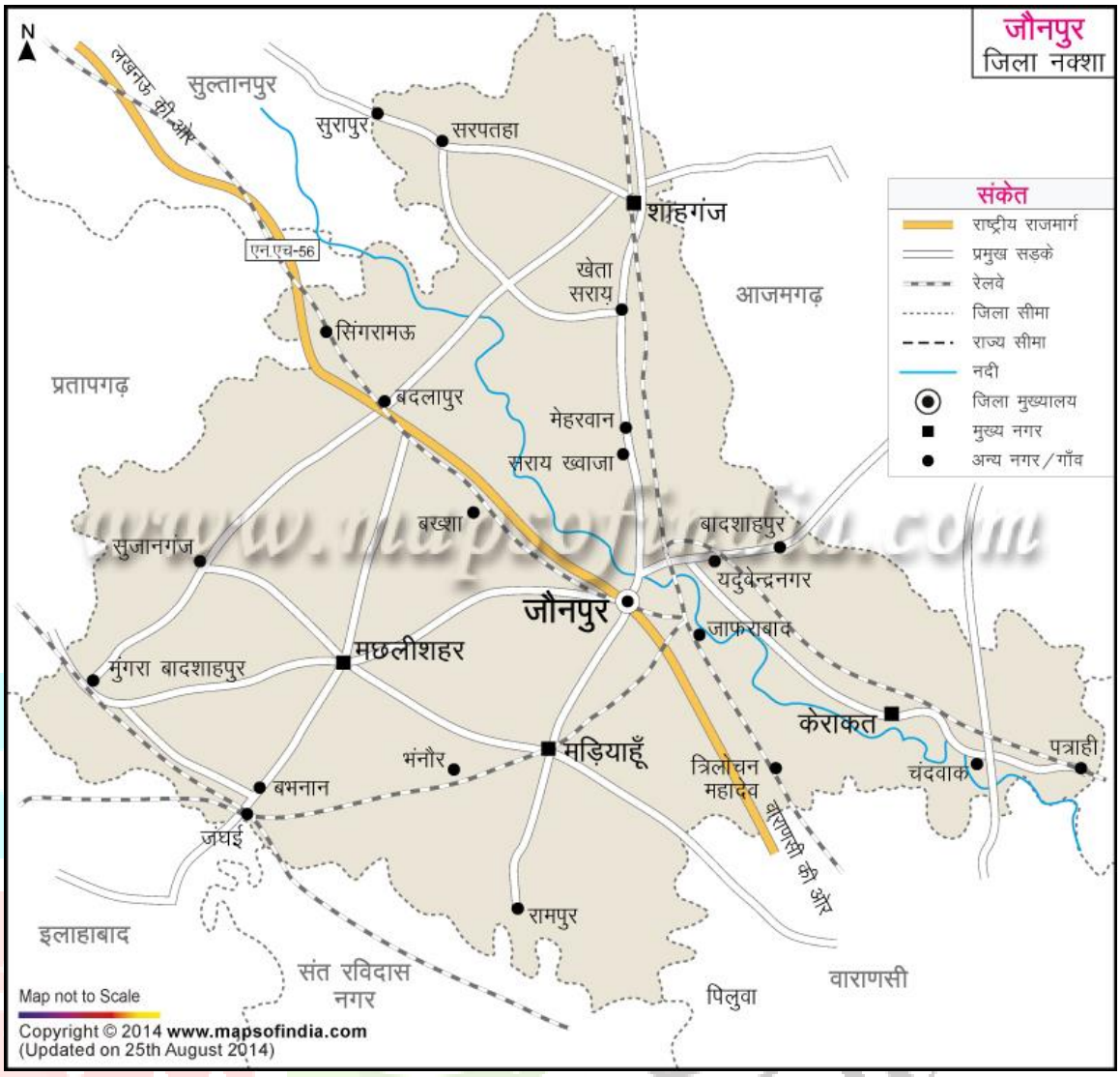

शाहगंज तहसील (जनपद जौनपुर) के अन्तर्गत सामाजिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन :– अध्ययन क्षेत्र शाहगंज तहसील के अन्तर्गत सामाजिक संरचना और सामाजिक क्रिया की संकल्पना के बीच शिक्षा और स्वास्थ्य की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा के द्वारा सामाजिक विकास का आधार प्रदान किया जाता है तथा स्वास्थ्य के द्वारा सामाजिक विकास का टिकाऊ स्तम्भ खड़ा होता है। शाहगंज तहसील के सामाजिक विकास हेतु दोनों बिन्दुओं का महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

शिक्षा :–साक्षरता किसी भी समाज एवं मानव विकास का सूचकांक का एक प्रमुख संकेतक है। साक्षरता किसी भी देश की जनसंख्या का गुणात्मकता को दर्शाने का आधार है। साक्षरता समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक प्रगति का प्रतीक है। इस प्रकार शाहगंज तहसील के अन्तर्गत 2011 की साक्षरता दर 58.22 है, जिसमें पुरूष साक्षरता 68.97 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 49.74 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय साक्षरता दर से कम है।

सारणी 1.1

शाहगंज तहसील में साक्षरता 2011 के अनुसार

वर्ष	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
1961	15.24	25.59	5.40
1971	19.03	30.14	7.78
1981	23.18	36.35	10.02
1991	29.75	42.83	16.45
2001	36.68	49.83	24.45
2011	58.22	68.97	49.74

स्रोत :– जिला जनगणना हस्तपुस्तिका जौनपुर 1961,1971,1981,1991,2001,2011

स्वास्थ्यः– किसी भी देश की प्रगति के लिए वहॉ के लोगों का शारीरिक , मानसिक दृष्टिकोण से स्वास्थ्य होना आवश्यक होता है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत स्वास्थ्य व्यवस्था की स्थिति, एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, यूनानी, होम्योपैथिक चिकित्सा के माध्यम से शाहगंज तहसील के अन्तर्गत स्वास्थ्य स्थिति का आंकलन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में प्रति पचास हजार जनसंख्या पर स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या 221 है।

सारणी सं0– 1.2

प्रति पचास हजार जनसंख्या पर स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या–2017–18

क0सं0	श्रेणी	आन्तरिक	न्याय पंचायतों की संख्या	न्याय पंचायतों का प्रतिशत
1	अतिनिम्न	15 से कम	4	10
2	निम्न	15 से 20	13	32.5
3	मध्यम	20 से 25	10	25
4	उच्च	25 से अधिक	13	32.5

स्रोतः– 1.सांख्यिकीय पत्रिका विकासखण्ड सुइथांकला शाहगंज सोधी, खुरहट

2. मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय जौनपुर

शाहगंज तहसील में 3 सामुदायिक केन्द्र, 12 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 7 होम्योपैथिक स्वास्थ्य केन्द्र, 5 यूनानी स्वास्थ्य केन्द्र। इस प्रकार शाहगंज तहसील में ए0एम0जी0एम0 के द्वारा विभिन्न भागों में 636 आशाओं की नियुक्ति की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में स्वास्थ्य सुविधाओं के माध्यम से ग्रामीण अधिवास की सामाजिक स्थिति में सुधार किया गया है।

व्यावसायिक संरचना :– जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना आर्थिक के वितरण प्रतिरूप को स्पष्ट करती है। किसी भी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था एवं आर्थिक विकास के स्तर का ज्ञान होता है। समतल एवं उपजाऊ मिट्ट वाला क्षेत्र होने के कारण इस क्षेत्र में कृषकों की सर्वाधिक संख्या पायी जाती है। अध्ययन क्षेत्र शाहगंज में कुल कर्मकार का प्रतिशत 31.91 प्रतिशत है। सारणी संख्या 1.2 से कर्मकारों एवं संलग्न (पुरूषो एवं स्त्रियों) की जनसंख्या न्यायपंचायत के स्तर पर दिखाई गई है। अध्ययन क्षेत्र

शाहगंज तहसील में कर्मकारों का सर्वाधिक प्रतिशत सवायन 46.35 प्रतिशत पाया जाता है। न्यूनतम कर्मकार वाली न्यायपंचायत भादी 23.96 प्रतिशत है। अकर्मकारों इसी न्याय पंचायत में सर्वाधिक है। अध्ययन क्षेत्र मेमं 23 (57.50 प्रतिशत) आधे से अधिक न्याय पंचायतों में कर्मकारों का प्रतिशत 30 से अधिक है। इनमें डीह अशर्फाबाद मयारी, सवायन, गैरवाहजयद, बुमकहा, सुइथाकलॉ, समोहपुर(शाहमऊ) मोहिउद्दीनपुर ताखापुरवा, कुहिया, मेहरावॉ, खलीलपुर, पट्टीनरेन्द्रपुर, टिसौली, निजामपुर, सोइथॉ, डिहिया, खुटहन, भागमलपुर टिकरीखुर्द एवं छतौरा न्याय पंचायतें शामिल हैं। 30 प्रतिशत से कम वाली न्यायपंचायतों की संख्या आधे से कम है। इनमें अरसिया, डेहरी, कोपा, बड़ागॉव, भादी, सबरहद, पाराकमाल, रानीमऊ, खेतासराय, रूधौंली, जमदहॉ, बरंगी, मानीकलां बढ़कर पटइला, मरहल एवं मुबारकपुर न्याय पंचायत शामिल हैं।

सरणी सं0 1.3

शाहगंज तहसील के व्यावसायिक संरचना कर्मकारों की संख्या 2017–18

क्र0 सं0	न्याय पंचायत का नाम	कुल कर्मकार	पुरूष	महिला
1	डीह अशार्फाबाद	5546	3349	1997
2	मयारी	4944	3059	1885
3	सवायन	6827	3818	3009
4	अरसिया	3347	2900	647
5	गैरवाह	7327	4687	2640
6	जमदहा	5316	2995	2321
7	बुमकहॉ	5493	3166	2327
8	सईथकला	6219	4047	2172
9	समोधपुर	7053	4296	2757
10	शाहमऊ	5109	2855	2254
11	डेहरी	2971	2148	823
12	मोहिउदीनपुर	6525	3939	2586
13	कोपा	5771	4497	1274
14	ताखापुरवा	6393	4235	2157
15	बड़ागॉव	4983	4103	880
16	भादी	9211	6910	2301
17	सबरहट	5648	4698	950
18	पाराकमाल	6158	4418	1740
19	रानीमऊ	3594	2587	1007
20	खेतासराय	3839	2834	1005
21	रूधौंली	3629	2833	796
22	जमदहॉ	5190	4224	966
23	बरंगी	4457	3331	1126
24	मानीकला	8869	6382	2487
25	बड़हा	6007	4098	1909
26	कुहियॉ	5411	3469	1942
27	मेहरावॉ	5487	3470	2017
28	खलीलपुर	6724	3887	2837

29	पही नरेन्द्रपुर	5247	3985	1262
30	तिसौली	5793	3466	2327
31	निजामपुर	4051	2834	1217
32	सौरइयॉ	5991	3495	2496
33	पटइला	3433	2385	1048
34	डिहियॉ	6980	4009	2971
35	खुटहन	11191	7235	3952
36	भागमपुर	5313	3421	1892
37	टिकरीखर्द	6185	3756	5429
38	मरहट	7432	5299	2133
39	मुबारकपुर	4061	2918	1143
40	छतौरा	6257	4101	2154
शाहगंज तहसील		**230181**	**154339**	**75842**

स्रोत : 1. जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 2011

2. राष्ट्रीय सूचना केन्द्र जौनपुर की जनगणना 2011

अध्ययन क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना में प्राथमिक व्यवसायों की प्रधानता है, जहॉ एक तरफ क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व का आभास मिलता है। रूढ़िवादी समाज होने के कारण कुछ जातियों को छोड़कर कर्मकारों में महिलाओं का अनुपात अल्प पाया जाता है। महिलाओं वृद्धों, बच्चों को व्यवसायिक संरचना के आर्थिक विकास में बहुंत कम योगदान रहा है। शाहगंज तहसील के अन्तर्गत व्यवसायिक संरचना का आधार कृषि व्यवसाय, व्यापार , औद्योगिक क्षेत्र, विनिर्माण, यातायात क्षेत्र, बाजार आदि व्यवसायों पर आर्थिक विकास के स्तम्भ का निर्माण व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत किया जाता हैं।

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत ग्रामीण नियोजन के अध्ययन की आवश्यकता :–

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत ''ग्रामीण नियोजन के उपागम के अनुसार विश्व बैंक 1975 में ग्रामीण विकास एक विशिष्ट समूह ग्रामीण निर्धनों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन का उन्नत करने की रणनीति ग्रामीण क्षेत्रों लागू किया जाये (कॉय 1992) ग्रामीण विकास को एक प्रक्रिया बताया गया है, जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण ग्रामीण जनजीवन को स्वावलम्बी बनाने के लिए विभिन्न उपागमों को अध्ययन क्षेत्रों में लाने की आवश्यकता है।'' [4]

1. बहुउद्देश्यीय उपागम :– अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत बहुउद्देश्यीय उपागम का मान्यता है कि गॉवों में रहने वाले लोगों के सामाजिक, आर्थिक विकास वर्ष 1952 में सामुदायिक ग्राम विकास कार्यक्रम के माध्यम ग्रामीण क्षेत्रों बहुउद्देश्यी उपागम को लाया गया है। जनपद के प्रत्येक विकासखण्डों में समग्र विकास हेतु–कृषि, पशुपालन, विनिर्माण उद्योग कुटीर उद्योग प्रौद्योगिकी विकास समग्र ग्राम विकास योजना के तहत सभी ग्रामीण क्षेत्रों की सुविधायें उपलब्ध करायी जा रही है।

2. जनतांत्रिक विकेन्द्रीकरण उपागम :– अध्ययन क्षेत्र में भारत सरकार के द्वारा सम्पूर्ण जनतांत्रिक विकेन्द्रीकरण अपागम का तात्पर्य जनपद स्तरीय प्रशासन व्यवस्था पर समग्र ग्राम विकास कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में घर घर तक पहुचाना है जैसे शौचालय व्यवस्था, खाद्या वितरण व्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था, कौशल विकास कार्यक्रम मानव कल्याण कार्यक्रम बालकल्याण कार्यक्रम स्वच्छता कार्यक्रम,

महिला सम्पूर्ण विकास कार्यक्रम, शिक्षा अभियान कार्यक्रम आदि के माध्यम जनतांत्रिक क्षेत्रों प्रशासनिक कार्यों के द्वारा सम्पूर्ण ग्रामीण विकास को लाया जा सकता है।

3. अधोमुखी रिसाव उपागम :– ''हमारे देश भारत मे स्वतन्त्रता के पश्चात 1950 के प्रारम्भिक दशक में राज्य की रणनीति पर आधारित है जैसे बोतल में कुप्पी से तेल डालना वर्ष 1970 के दशक में भारत सरकार सम्पूर्ण ग्रामीण विकास नियोजन के विभिन्न कार्यक्रमों में गॉव गॉव तक पहुॅचाने का कार्य अधोमुखी रिसाव उपागम के माध्यम से जन–जन तक विकास के कार्यक्रमों को पहुॅचाया गया है।'' [5]

4.जनसहभागिता लक्ष्य समूह उपागम :– अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत जन सहभागिता उपागम की प्रमुख मान्यता है कि ग्रामीण विकास की पूरी प्रक्रिया को जन सहभागी बनाना है ग्रामीण विकास आने वाले सभी विकास स्रोतों के द्वारा सामुदायिक विकास को सभी लोगों तक कल्याण भावना रखते हुए सहभागिता को बनाये रखना ही समग्र ग्रामीण विकास कार्यक्रम माना जा सकता है।

5. क्षेत्रीय एवं समन्वित ग्रामीण विकास उपागम :– ग्रामीण विकास के क्षेत्रीय उपागम का तात्पर्य भारत जैसे विशाल भौगोलिक क्षेत्रों ग्रामीण विकास एक समान नहीं है, क्योंकि पर्वतीय, मैदानी एवं पोखरी क्षेत्रों में मिट्टी की उपजाऊ समतल धरातल एक रूकता न होने के क्षेत्रीय ग्रामीण उपागम हेतु नियोजन की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। वर्ष 1970 के दशक समन्वित ग्रामीण विकास उपागम के अन्तर्गत जहॉ एक ओर ग्रामीण विकास के नये आयाम जैसे– आर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक स्वास्थ्य प्रौद्योगिक को एक समन्वित करके ग्रामीण विकास के कार्यक्रमों को जन–जन तक प्रत्येक नागरिक के सुविधा उपलब्ध करायी जाये तथा समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रम को लागू किया जाये।

6. गॉधी ग्रामीण पुनर्निर्माण उपागम :– अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत '' ग्रामीण पुनर्निर्माण का आशय है कि गॉवों को विकसित एवं रूपान्तरित करते हुए उसका पुनः निर्माण करना ग्रामीण विकास के उपागम विविध है। संघर्ष वादी प्रारूप में ग्रामीण विकास पुनर्निर्माण की प्रक्रिया द्वन्दात्मक है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में परिवर्तन के जरिये सम्पूर्ण ग्रामीण संरचना का पुनर्निर्माण सम्भव है। महात्मागॉधी की ग्रामीण पुनर्निर्माण योजना को दो आधारों पर ग्रामीण प्रौद्योगिकी शक्ति का विकास करके आप बढ़ाने वाले कार्यक्रम, रोजगार उन्मुख कार्यक्रम शिक्षा एवं कल्याण कार्यक्रम क्षेत्रीय कार्यक्रम के माध्यम ग्रामीण क्षेत्रों में विकास हेतु नियोजन को अपनाया जा सकता है'' [6] ग्रामीण विकास एक बहुआयामी अवधारणा है ग्रामीण विकास के विविध कार्यक्रम कृषि, पशुपालन, ग्रामीण हस्तकला एवं उद्योग ग्रामीण मूल संरचना में बदलाव आदि के द्वारा ग्रामीण विकास में लोगों के जीवन में गुणात्मक उन्नति हेतु प्रौद्योगिकी का विकास है। ग्रामीण पुनर्निर्माण उपागम है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

अध्ययन क्षेत्र शाहगंज तहसील (जौनपुर जनपद) के अन्तर्गत सामाजिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन तथा ग्रामीण नियोजन के उपागम की आवश्यकता के सन्दर्भ में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि ग्रामीण अधिवास के अन्तर्गत ग्रामीण विकास के सामाजिक विकास का स्तम्भ शिक्षा एवं स्वास्थ्य को आधार प्रदान किया गया तथा व्यावसायिक संरचना के अन्तर्गत कृषि, पशुपालन, कुटीर, व्यापार, यातायात के साधन , उद्योग कारखाने विनिर्माण क्षेत्र के द्वारा सम्पूर्ण ग्रामीण व्यावसायिक संरचना को आधार प्रदान किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत शिक्षा एवं स्वास्थ्य दो पहलुओं को जमीनी दर 100 प्रतिशत लाने का प्रयास करना चाहिए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में (रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा) विकास के स्तम्भ माने जाते है। अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहॉ की लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या प्राथमिक कार्यों में संलग्न है, वहॉ का आर्थिक धीमीगति विकसित हो रही है। शोधार्थिनी का विचार है कि शाहगंज तहसील में ग्रामीण विकास हेतु सामाजिक एवं व्यावसायिक संरचना के ढॉचे में सुधार की आवश्यकता है। ग्रामीण विकास के नियोजन हेतु विभिन्न उपागमों के माध्यम से समग्र ग्रामीण कल्याण हेतु राज्य सरकार एवं भारत सरकार की योजनाओं को जन–जन सहभागिता बनाकर समग्र ग्रामीण विकास का सपना साकार किया जा सकता है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत शाहगंज तहसील में ग्रामीण विकास हेतु भारत सरकार की विभिन्न योजनायें लाकर जैसे–समग्र कृषि विकास योजना, सिंचाई योजना, पेयजल योजना, जन–धन योजना, शौचालय योजना, बंजर भूमि विकास योजना, पशुपालन विकास योजना, स्वास्थ्य बीमा योजना, शिक्षा अभियान योजना, निःशुल्क चिकित्सा सेवा योजना, कौशल विकास योजना, मातृकल्याण योजना, बालकल्याण योजना, लघु कुटीर योजना, ग्रामीण स्वरोजगार योजना, मानव सहयोग योजना, फसल बीमा योजना, किशोरी कल्याण योजना, खाद्य वितरण योजना, विद्युत योजना, समग्र ग्रामीण कल्याण एवं विकास योजना आदि योजनाओं के द्वारा अध्ययन क्षेत्र के समग्र बिन्दुओं को ग्रामीण कल्याण हेतु अपनाया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. जिला जनगणना हस्तपुस्तिका जौनपुर 1961,1971,1981,1991,2001,2011
2. 1. सांख्यिकीय पत्रिका विकासखण्ड सुइथाकला सोधी, खुरहट–2011
   2. मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय जौनपुर– 2017
3. 1. जिला जनगणना हस्तपुस्तिका 2011,
   2. राष्ट्रीय सूचना केन्द्र जौनपुर 2011
4. ग्रामीण विकास पत्रिका – 2020 , नई दिल्ली
5. ग्रामीण विकास पत्रिका – 2018, हैदराबाद
6. ग्रामीण विकास की आवश्यकता–लेख पत्रिका, नई दिल्ली
7. समाचार पत्र जर्नल पेपर शोध प्रबन्ध आदि